International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

श्लोकसाहित्य और लोकतांत्रिक राजनीतिष्ठ गढ़वाल मण्डल में लोकसाहित्य एवं राजनीतिक चेतना का एक अध्ययन

Dr. Jagmohan Singh Negi

Assistant Professor/Teacher, Higher Education, Govt. P.G. College Gopeshwar (Chamoli)

सारांश

लोकसाहित्य यहां मात्र मनोरंजन अथवा सांस्कृतिक परंपरा के संरक्षण तक ही समिति नहीं है, बल्कि यह किसी समाज की सामूहिक चेतना, सामाजिक अनुभवों और ऐतिहासिक स्मृतियों के महत्वपूर्ण अभिलेख के रूप में भी हैं। गढ़वाल के लोकगीतों और लोकगाथाओं में सामाजिक विषमता, श्रम, प्रवासन, सैनिक जीवन, स्त्री–अनुभव, प्राकृतिक संसाधनों, स्थानीय अस्मिता तथा सामाजिक परिवर्तन, धार्मिक, आर्थिक जैसे विषयों के साथ–साथ शासन, सत्ता और जनसरोकारों से संबंधित अनेक राजनीतिक संकेत भी दृष्टव्य होते हैं।

लोकसाहित्य और राजनीति के संबंध को केवल राजनीतिक दलों अथवा चुनावी राजनीति या राजनीतिक गतिविधियों के परिपेक्ष्य में अवलोकन करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक राजनीति का व्यापक अर्थ, नागरिक भागीदारी, अधिकार–बोध, सामाजिक न्याय, *स्थानीय* स्वशासन, जनप्रतिनिधित्व, जवाबदेही, समानता तथा सामूहिक निर्णय–प्रक्रिया से भी इसका अवलोकन किया जाता है। वस्तुतः प्रस्तुत शोध पत्र यह समझने का प्रयास करेगा कि गढ़वाल मण्डल का प्रचलित लोकसाहित्य राजनीतिक चेतना के निर्माण, अभिव्यक्ति और प्रसार में किस प्रकार भूमिका का निर्वहन करता है तथा लोकजीवन में सत्ता, शासन और अधिकारों की अवधारणाएँ किस रूप में प्रकट होती हैं।

उत्तराखण्ड में लोकसाहित्य की पूर्व समय से अहम भूमिका रही है। किन्तु पृथक राज्य की मांग को लेकर उत्तराखण्ड की धरती पर उपजा राज्य आंदोलन के लोकगीतों, नारों, नाटकों, कहानियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा जनगीतों की भूमिका ने यहां लोकसाहित्य को ओर भी महत्वपूर्ण बना लिया था। लोकसाहित्य ने आंदोलन के दौरान स्थानीय पहचान, क्षेत्रीय आकांक्षाओं और जनसरोकारों को अभिव्यक्ति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज्य निर्माण के बाद बदलते राजनीतिक एवं सामाजिक परिवेश में लोकसाहित्य में स्थानीय पहचान, विकास, पलायन, रोजगार, पर्यावरण संरक्षण, महिला सहभागिता, सामाजिक न्याय तथा शासन–व्यवस्था से जुड़ी आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है, यह भी प्रस्तुत शोध परियोजना में एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

कीवर्ड्स– लोकसाहित्य, लोकतांत्रिक राजनीति, गढ़वाल मण्डल, राजनीतिक चेतना, उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन, जनसहभागिता, सामाजिक न्याय, क्षेत्रीय अस्मिता, लोकपरंपरा, जनसरोकार।

उद्देश्य

प्रस्तावित शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. गढ़वाल मंडल के चयनित लोकसाहित्य में व्यक्त राजनीतिक चेतना के स्वरूप, प्रवृत्तियों एवं अभिव्यक्ति तथा इनमें सत्ता, शासन, नेतृत्व और जनजीवन के अंतर्संबंधों का विश्लेषण का अध्ययन करना
2. गढ़वाली लोकसाहित्य में लोकतांत्रिक मूल्यों समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, अधिकार, कर्तव्य, जनसहभागिता एवं सामुदायिक उत्तरदायित्व की अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।

3. गढ़वाल मंडल की महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों एवं ग्रामीण समुदायों के सामाजिक–राजनीतिक अनुभवों तथा क्षेत्रीय अस्मिता, जनजागरूकता और जनसरोकारों की लोकसाहित्यिक अभिव्यक्तियों का अध्ययन करना।
4. गढ़वाल मंडल के लोकसाहित्य में पलायन, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, वन, जल, स्थानीय संसाधनों एवं विकास से संबंधित समकालीन सामाजिक–राजनीतिक प्रश्नों की अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
5. उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन के दौरान लोकगीतों, जनगीतों, नारों एवं लोकगाथाओं की भूमिका तथा राज्य गठन के पश्चात् गढ़वाली लोकसाहित्य में उभरती राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

शोध के प्रारंभिक चरण में विषय की प्रकृति, उपलब्ध साहित्य तथा पूर्ववर्ती अध्ययनों के आधार पर निम्नलिखित संभावित परिकल्पनाएँ प्रस्तावित की जा रही हैं।

1. गढ़वाल मण्डल का लोकसाहित्य स्थानीय समाज की राजनीतिक चेतना का महत्वपूर्ण माध्यम समझा जा सकता है।
2. गढ़वाली लोकसाहित्य सामाजिक न्याय, अधिकार, नेतृत्व, शासन एवं सामुदायिक उत्तरदायित्व से जुड़े अनुभवों को प्रकट करने में सहायक है।
3. वर्तमान में प्रचालित लोकसाहित्य में पलायन, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, विकास एवं स्थानीय अधिकार आदि अनेक मुद्दें सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना में हो रहे परिवर्तनों को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हैं।
4. पृथक उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन ने गढ़वाली लोकसाहित्य में स्थानीय अस्मिता, क्षेत्रीय पहचान एवं राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति को एक सीमा तक प्रभावित किया।
5. महिला लोक–अभिव्यक्तियों में सामाजिक अधिकारों, पारिवारिक संबंधों, श्रम एवं सामुदायिक जीवन से संबंधित विशिष्ट सामाजिक चेतना की अभिव्यक्त होती है।

साहित्यिक अवलोकन

प्रस्तावित शोध–विषय "लोकसाहित्य और लोकतांत्रिक राजनीति'' गढ़वाल मण्डल में लोकसाहित्य एवं राजनीतिक चेतना के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन" के लिए उपलब्ध साहित्य का अध्ययन निम्नवत् है।

1. मोहनलाल बाबुलकर की पुस्तक (1964) ''गढ़वाली लोक–साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन'' गढ़वाली लोकसाहित्य के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण आधारभूत ग्रंथ है। पुस्तक में गढ़वाली लोकगीत, लोकगाथा और लोकजीवन से संबंधित सामग्री का विवेचन मिलता है।
2. गोविन्द चातक द्वारा संकलित ''गढ़वाली लोकगीत'' 2000 में प्रकाशित पुस्तक में प्रकृति एवं स्मृति, प्रणय तथा अन्य प्रकार के गढ़वाली लोकगीतों को संकलित किया गया है। इसमें संकलित गीतों के माध्यम से गढ़वाल के सामाजिक जीवन, प्रकृति, पारिवारिक संबंधों और सामुदायिक अनुभवों की अभिव्यक्ति को समझा जा सकता है।
3. गोविन्द चातक की ''गढ़वाली लोक गीत विविधा'' 2001 में लोकगीतों में अभिव्यक्त सामाजिक संबंधों, सामुदायिक जीवन, श्रम, प्रकृति तथा स्थानीय अनुभवों की पड़ताल की गई है।
4. मोहनलाल बाबुलकर की ''गढ़वाली लोक साहित्य की प्रस्तावना'' 2004 में गढ़वाली लोकसाहित्य की आधारभूत अवधारणाओं, स्वरूप और परंपरा को समझने में सहायक है।
5. डॉ. जगदम्बा प्रसाद कोटमाला की ''गढ़वाली काव्य का उद्भव, विकास एवं वैशिष्ट्य'' (2011) में गढ़वाली साहित्य के विकास और उसकी विशेषताओं को समझने के लिए उपयोगी है।
6. लूसिया मिचेलुट्टी (स्नबपं डपबीमसनजजपद्ध श्लोकतंत्र का स्थानीयकरण : भारत में राजनीति, जाति और धर्म'' 2008 में उत्तर भारत के यादव समुदाय के अध्ययन के माध्यम से यह दिखाया है कि धार्मिक विश्वास,

जातीय–सामुदायिक पहचान, स्थानीय परम्पराएँ, लोक–धारणाएँ और ऐतिहासिक स्मृतियाँ किस प्रकार राजनीतिक पहचान एवं राजनीतिक सहभागिता को प्रभावित करती हैं।

7. जेले जे– पी– वाउटर्स श्रमससम श्र. च ॅवनजमते की (2022) ''पूर्वोत्तर भारत में स्थानीय राजनीतिरू लोकतंत्र, जातीयता और मूल–निवासी पहचान'' में उल्लेख है कि पूर्वोत्तर भारत में स्थानीय/लोक–आधारित राजनीतिक धारणाओं लोकतंत्र, जातीय पहचान, स्वदेशी चेतना और राजनीतिक जीवन का अध्ययन करती है। इसमें विभिन्न मानवशास्त्रियों, राजनीतिक वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और भूगोलवेत्ताओं के लेख शामिल हैं। पुस्तक का केंद्रीय तर्क यह समझने पर केंद्रित है कि विभिन्न स्थानीय समुदाय आधुनिक लोकतांत्रिक अवधारणाओं को केवल बाहर से ग्रहण नहीं करते, बल्कि उन्हें अपनी स्थानीय संस्कृति, पहचान, परम्पराओं और राजनीतिक धारणाओं के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित करते हैं।

उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि गढ़वाली लोकसाहित्य पर महत्वपूर्ण संकलनात्मक, साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्य उपलब्ध हैं। फिर भी उपलब्ध साहित्य में गढ़वाल मण्डल के लोकसाहित्य और राजनीतिक चेतना के अंतर्संबंधों का एकीकृत एवं क्षेत्र–आधारित अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है। विशेष रूप से लोकगीतों, लोकगाथाओं, महिला लोक–अभिव्यक्तियों, उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन की लोकस्मृति, पलायन, पर्यावरण, विकास तथा डिजिटल लोक–अभिव्यक्तियों को लोकतांत्रिक राजनीतिक चेतना के संदर्भ में एक साथ रखकर अध्ययन करने की पर्याप्त संभावना है। अतः प्रस्तावित शोध उपलब्ध साहित्य से प्राप्त आधार को आगे बढ़ाते हुए गढ़वाल के लोकसाहित्य को सामाजिक अनुभव, सामुदायिक स्मृति और राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में समझने का प्रयास करेगा।

अनुसंधान विधि

प्रस्तावित शोध में गुणात्मक एवं वर्णनात्मक–विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का मुख्य रूप से प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रकाशित पुस्तकें, शोधग्रंथ, शोध–पत्र एवं शोध–प्रबंध, पत्र–पत्रिकाएँ, सरकारी रिपोर्ट, उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन से संबंधित दस्तावेज, अभिलेखीय सामग्री, डिजिटल अभिलेख, समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ, ऑनलाइन उपलब्ध प्रमाणित सामग्री शोध का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संग्रहित सामग्री का विषयगत एवं पाठ–विश्लेषण किया गया।

अध्ययन का क्षेत्र – परिचय

गढ़वाल मण्डल उत्तराखण्ड राज्य के दो प्रमुख प्रशासनिक मण्डलों में से एक है। गढ़वाल मण्डल में सात जिले में देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तरकाशी, चमोली और रुद्रप्रयाग सम्मिलित हैं। मण्डल का मुख्यालय पौड़ी में स्थित है, जबकि देहरादून उत्तराखण्ड की राजधानी है। यहाँ का भौगोलिक विस्तार मैदानी क्षेत्रों से लेकर ऊँची हिमालयी पर्वतशृंखलाओं तक है। गंगा, यमुना, अलकनन्दा और भागीरथी जैसी प्रमुख पवित्र नदियाँ क्षेत्र के प्राकृतिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण सकारात्मक भूमिका निभाती हैं।

धार्मिक दृष्टि से गढ़वाल का अवलोकन किया जाय तो इस क्षेत्र को देवभूमि कहा जाता है। बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री यहाँ के प्रमुख तीर्थस्थल हैं। इसके अतिरिक्त आदिबदरी, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमहेश्वर और त्रियुगीनारायण, आदि शाक्त, वैष्णव एवं शैव तीर्थ मन्दिर काफी मात्रा में हैं। यहाँ पंचप्रयाग, पंच बदरी, पंचकेदार विद्यामान हैं। हरिद्वार और ऋषिकेश धार्मिक अनुष्ठानों, योग, ध्यान तथा आध्यात्मिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र हैं। ग्रामदेवताओं, कुलदेवताओं और लोकदेवताओं का स्थान भी पर्याप्त मात्रा में है।

गढ़वाल का सामाजिक जीवन पर्वतीय परिस्थितियों, पारिवारिक परम्पराओं और सामुदायिक सहयोग की भावना रही है। ग्रामीण परिवेश में पारस्परिक सहायता, सामूहिक श्रम और सामाजिक सहभागिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। महिलाएँ कृषि, पशुपालन तथा जल एवं वन संसाधनों के प्रबन्धन में उल्लेखनीय योगदान देती हैं। चिपको आन्दोलन जैसे पर्यावरणीय जनआन्दोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने सामाजिक चेतना और सामूहिक नेतृत्व को नई

पहचान प्रदान की और पर्यावरण संरक्षण में अपना अमूल्य योगदान दिया।

गढ़वाल की सांस्कृतिक विरासत में गढ़वाली भाषा, लोकगीत, लोकगाथाएँ, जागर, पँवाड़े, लोकनृत्य और पारम्परिक रीति–रिवाज , परम्पराएं आदि प्रमुख हैं। ये लोकपरम्पराएँ क्षेत्र के इतिहास, धार्मिक विश्वासों, वीरता, प्रकृति–प्रेम और सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण की अभिव्यक्त को भी प्रकट करती हैं। आधुनिक शिक्षा, संचार और नगरीकरण के प्रभाव से यहाँ की सामाजिक संरचना में निरन्तर बदलाव आया है।

गढ़वाल मण्डल की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, पशुपालन, पर्यटन, तीर्थाटन, वानिकी, जलविद्युत, व्यापार और सेवा क्षेत्र पर आधारित है। पर्वतीय क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेतों पर बहुत कम मात्रा में तथा मैदानी भागों में पर्याप्त मात्रा में फसलों का उत्पदान होता है। चारधाम यात्रा, मसूरी, ऋषिकेश, हरिद्वार, औली और फूलों की घाटी जैसे पर्यटन स्थल रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हैं। वहीं देहरादून और हरिद्वार में उद्योग, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा परिवहन जैसी गतिविधियाँ आर्थिक विकास में योगदान महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, गढवाल मण्डल के सात जिलों की कुल जनसंख्या 58,57,294 थी। इनमें हरिद्वार की सबसे अधिक जनसंख्या 18,90,422, तथा सबसे कम रुद्रप्रयाग की 2,42,285 थी।

अतः गढ़वाल मण्डल प्राकृतिक संसाधनों, धार्मिक स्थलों, सांस्कृतिक विविधता और ऐतिहासिक विरासत की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि पलायन, बेरोजगारी, सीमित कृषि भूमि, स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाओं की उपलब्धता तथा पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ इसके विकास को प्रभावित करती हैं। सतत विकास, स्थानीय रोजगार, शिक्षा के विस्तार और सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से गढ़वाल की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति को सुदृढ़ किया जा सकता है।

व्याख्या, विश्लेषण

लोकसाहित्य किसी समाज की सामूहिक स्मृति, सामाजिक अनुभव, सांस्कृतिक आत्मबोध और सामुदायिक चेतना का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, जागर, लोकनाट्य, लोकोक्तियाँ तथा कहावतें केवल मनोरंजन अथवा सांस्कृतिक परंपरा के वाहक नहीं हैं, बल्कि इनके माध्यम से किसी समाज के सुख–दुःख, संघर्ष, श्रम, प्रवासन, सामाजिक संबंध, प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक विश्वास, सामाजिक असमानता, स्त्री–अनुभव तथा सत्ता–संबंधों की अभिव्यक्ति भी होती है। इस दृष्टि से लोकसाहित्य को समाज की सामूहिक चेतना और उसके ऐतिहासिक अनुभवों को समझने का महत्त्वपूर्ण स्रोत माना जा सकता है।

गढ़वाल मण्डल का लोकसाहित्य अपनी समृद्ध मौखिक परंपरा के कारण विशेष महत्त्व रखता है। गढ़वाली लोकसाहित्य की प्रमुख विधाओं में लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य तथा प्रकीर्ण लोकसाहित्य सम्मिलित हैं। लोकगीतों में संस्कार गीत, धार्मिक एवं जागर गीत, ऋतु एवं पर्व गीत, प्रेम एवं विरह गीत, सामाजिक एवं मनोरंजनात्मक गीत तथा श्रम एवं व्यवसाय से संबंधित गीत प्रमुख हैं। लोकगाथाओं में धार्मिक, वीर, प्रणय तथा अन्य ऐतिहासिक एवं लोक–ऐतिहासिक आख्यान मिलते हैं। इसी प्रकार लोककथाएँ, लोकनाट्य, लोकोक्तियाँ, कहावतें और मुहावरे भी लोकजीवन की सामूहिक स्मृति को सुरक्षित रखते हैं।

गढ़वाली लोकसाहित्य में राजनीतिक चेतना का अध्ययन केवल आधुनिक राजनीतिक गीतों तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। इसे व्यापक रूप से तीन स्तरों पर समझा जा सकता है। प्रथम ऐतिहासिक राजनीतिक चेतना, द्वितीय लोक–सामाजिक राजनीतिक चेतना तथा तृतीय आधुनिक राजनीतिक चेतना। ऐतिहासिक राजनीतिक चेतना में राजसत्ता, राज्य, युद्ध, सैन्य संगठन और सत्ता–संघर्ष की स्मृतियाँ आती हैं। वीरगाथाओं और पंवाड़ों में माधो सिंह भण्डारी, तीलू रौतेली, लोदी रिखोला तथा कालू भण्डारी जैसे पात्रों के माध्यम से युद्ध, वीरता, सामुदायिक रक्षा और प्रतिरोध की लोकस्मृति संरक्षित हुई है। इन रचनाओं को आधुनिक राजनीतिक आंदोलन के रूप में देखने के बजाय तत्कालीन सत्ता–संबंधों, राज्य–संघर्ष और सामुदायिक प्रतिरोध की लोक–अभिव्यक्ति के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

गढ़वाल की जागर परंपरा राजनीतिक चेतना के अध्ययन का दूसरा महत्त्वपूर्ण आधार है। जागर को केवल धार्मिक

अनुष्ठान के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसमें स्थानीय देवताओं, वीरों, पूर्वजों, वंश–परंपराओं, ऐतिहासिक घटनाओं तथा सामुदायिक अनुभवों की स्मृतियाँ भी संरक्षित रहती हैं। जागर में न्याय–अन्याय, लोक–शिकायत, सामाजिक अधिकार तथा सामुदायिक न्याय की धारणाओं का अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार जागर लोक–इतिहास, लोकन्याय और सामुदायिक सत्ता–बोध को समझने का महत्त्वपूर्ण माध्यम बनता है।

समकालीन गढ़वाली लोकगीतों में राजनीतिक चेतना का अधिक प्रत्यक्ष स्वर दिखाई देता है। शासन–व्यवस्था, विकास, बेरोजगारी, पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, संचार, सामाजिक असमानता और जनप्रतिनिधित्व जैसे प्रश्न जब शासन, सार्वजनिक नीति या सत्ता–संबंधों से जुड़ते हैं, तब वे राजनीतिक चेतना का विषय बन जाते हैं।

समकालीन गढ़वाली लोकसाहित्य में राजनीतिक व्यंग्य भी राजनीतिक चेतना की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। नरेन्द्र सिंह नेगी जैसे रचनाकारों के गीतों में राजनीति, चुनाव, नेतृत्व, विकास और सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ दिखाई देती हैं। 'नौछमी नरैणा' और 'नेता' जैसी रचनाओं का अध्ययन सत्ता, नेतृत्व और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति लोक–दृष्टि को समझने की दृष्टि से किया जा सकता है। राजनीतिक व्यंग्य के माध्यम से लोकसमाज अपने अनुभवों, असंतोष और अपेक्षाओं को रचनात्मक ढंग से व्यक्त करता है।

उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन गढ़वाली आधुनिक लोकसाहित्य में राजनीतिक चेतना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अध्याय है। आंदोलन से जुड़े जनगीतों में पृथक उत्तराखण्ड की माँग, पहाड़ी अस्मिता, रोजगार, पलायन, क्षेत्रीय विकास, प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय अधिकार तथा राजनीतिक उपेक्षा जैसे प्रश्न अभिव्यक्त हुए। 'उठा जागा उत्तराखण्ड्यूं', 'जाग जाग हे उत्तराखण्डि' तथा अन्य आंदोलनकारी गीतों ने आंदोलन की सामूहिक स्मृति और जनभागीदारी को अभिव्यक्ति प्रदान की। इस दृष्टि से राज्य आंदोलन के गीतों का अध्ययन लोकसाहित्य और जनआंदोलन के पारस्परिक संबंध को समझने में सहायक होगा।

इसी प्रकार पलायन संबंधी लोकगीत अप्रत्यक्ष राजनीतिक चेतना के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। पलायन स्वयं सामाजिक और आर्थिक अनुभव है, किंतु जब उसे रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास, सरकारी नीतियों तथा क्षेत्रीय असमानता से जोड़ा जाता है, तब उसमें राजनीतिक चेतना के तत्व उभरते हैं। पर्यावरण और संसाधनों से संबंधित गीतों में भी प्राकृतिक संसाधनों, स्थानीय अधिकार तथा विकास की अवधारणा से जुड़े प्रश्न दिखाई दे सकते हैं। चिपको आंदोलन तथा अन्य स्थानीय जनसंघर्षों से संबंधित लोकगीत इस संदर्भ में विशेष अध्ययन की माँग करते हैं। आधुनिक संचार माध्यमों और डिजिटल तकनीक ने गढ़वाली लोकसाहित्य के स्वरूप और प्रसार को भी प्रभावित किया है। पारंपरिक मौखिक परंपरा के साथ अब लोकगीतों और समसामयिक घटनाओं पर आधारित गीतों का प्रसार वीडियो, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों के द्वारा हो रहा है। इससे लोकसाहित्य के निर्माण, प्रस्तुति, संरक्षण और राजनीतिक संप्रेषण के स्वरूप में परिवर्तन आया है।

गढ़वाली लोकसाहित्य में राजनीतिक चेतना का वर्गीकरण

उत्तराखण्ड देव भूमि के गढ़वाल मण्डल के लोकसाहित्य को राजनीतिक चेतना की दृष्टिकोण से अद्योलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

गढ़वाली लोकसाहित्य में राजनीतिक चेतना का वर्गीकरण

क्र.सं,	लोकसाहित्य की विधा / श्रेणी	प्रमुख राजनीतिक आयाम	अध्ययन हेतु प्रमुख विषय / उदाहरण
1	वीरगाथाएँ एवं पंवाड़े	राजसत्ता, राज्य–सुरक्षा, युद्ध, सैन्य संगठन, सत्ता–संघर्ष, वीरता एवं सामुदायिक प्रतिरोध	माधो सिंह भण्डारी का पंवाड़ा; तीलू रौतेली की वीरगाथा; लोदी रिखोला की वीरगाथा; कालू भण्डारी की वीरगाथा; अन्य वीर एवं ऐतिहासिक पंवाड़े
		लोकन्याय, सामाजिक अधिकार,	देवी–देवताओं से संबंधित जागर; वीर एवं पूर्वजों

2	जागर एवं देव–परंपरा	सामुदायिक निर्णय, स्थानीय सत्ता–संबंध एवं सामूहिक स्मृति	के जागर; स्थानीय ऐतिहासिक एवं लोक–ऐतिहासिक आख्यान; लोक–शिकायत एवं न्याय संबंधी अभिव्यक्तियाँ सामुदायिक सहभागिता, सांस्कृतिक एकता और धार्मिक परंपरा।
3	सामाजिक लोकगीत	शासन–व्यवस्था, सार्वजनिक सुविधाएँ, विकास, सामाजिक न्याय एवं जनअपेक्षाएँ	सामाजिक समस्याओं के गीत ; ग्रामीण जीवन एवं जनसमस्याओं के गीत; शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सड़क संबंधी गीत; बेरोजगारी एवं आर्थिक कठिनाइयों के गीत; सामाजिक असमानता एवं जनप्रतिनिधित्व संबंधी गीत
4	राजनीतिक व्यंग्य गीत	सत्ता, नेतृत्व, चुनाव, शासन, भ्रष्टाचार, विकास एवं राजनीतिक उत्तरदायित्व	'नौछमी नरैणा'; 'नेता'; चुनाव एवं नेतृत्व संबंधी व्यंग्य गीत; भ्रष्टाचार एवं शासन–व्यवस्था पर आधारित गीत; समकालीन राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्यात्मक रचनाएँ
5	आंदोलनकारी लोकगीत	जनप्रतिरोध, अधिकार, स्थानीय संसाधनों पर दावेदारी, पर्यावरणीय न्याय एवं सामूहिक लामबंदी	स्वतंत्रता आंदोलन संबंधी गीत; वन एवं पर्यावरण आंदोलनों के गीत; चिपको आंदोलन के गीत; स्थानीय जनसंघर्षों के गीत; विस्थापन एवं संसाधन–अधिकार संबंधी गीत
6	उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन के लोकगीत	क्षेत्रीय अस्मिता, पृथक राज्य की माँग, राजनीतिक उपेक्षा, रोजगार, विकास एवं जनभागीदारी	पृथक उत्तराखण्ड की माँग संबंधी गीत; पहाड़ी अस्मिता के गीत; 'उठा जागा उत्तराखण्ड्यूं'; 'जाग जाग हे उत्तराखण्डि'; आंदोलनकारी जनगीत एवं रैली गीत
7	पलायन एवं बेरोजगारी के लोकगीत	सरकारी नीति, क्षेत्रीय असमानता, विकास, रोजगार, सार्वजनिक सेवाएँ एवं ग्रामीण संकट	पलायन संबंधी गीत; बेरोजगारी के गीत; गाँवों के खाली होने की पीड़ा; रोजगार एवं आजीविका संबंधी गीत; शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं से संबंधित गीत
8	पर्यावरण एवं संसाधन संबंधी लोकगीत	पर्यावरणीय न्याय, संसाधन–अधिकार, स्थानीय समुदाय एवं विकास की अवधारणा	वन संरक्षण के गीत; चिपको आंदोलन संबंधी गीत; जल, जंगल एवं जमीन से संबंधित गीत; प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय अधिकार के गीत
9	घटना–प्रधान एवं समसामयिक लोकगीत	तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ, जनप्रतिक्रिया, सामूहिक स्मृति एवं सामाजिक टिप्पणी	स्थानीय राजनीतिक घटनाओं पर आधारित गीत; शासन एवं प्रशासन संबंधी घटनाएँ; जनआंदोलनों पर आधारित गीत; समसामयिक सामाजिक–राजनीतिक घटनाओं के गीत
10	लोककथाएँ	शासन, न्याय, सत्ता, नेतृत्व, सामाजिक व्यवस्था एवं लोक–आदर्श	राजा–रानी संबंधी कथाएँ; राजा–प्रजा संबंधी कथाएँ; वीर कथाएँ; न्याय–अन्याय संबंधी कथाएँ; नीति एवं सामाजिक व्यवस्था संबंधी कथाएँ
11	लोकनाट्य एवं	सामुदायिक संवाद, सामाजिक आलोचना, लोकमत एवं	स्वांग; धार्मिक एवं सामाजिक लीलाएँ; नृत्य–प्रधान लोकप्रस्तुतियाँ; मुखौटा एवं अनुष्ठानात्मक प्रदर्शन;

	लोकप्रस्तुतियाँ	सामूहिक चेतना	गीत–नृत्य आधारित सामुदायिक प्रस्तुतियाँ
12	लोकोक्तियाँ, कहावतें एवं मुहावरे	शासन, न्याय, नेतृत्व, अधिकार एवं सत्ता के प्रति लोक–दृष्टिकोण	शासन एवं नेतृत्व संबंधी कहावतें; न्याय–अन्याय संबंधी लोकोक्तियाँ; अधिकार एवं सामाजिक संबंधों से संबंधित मुहावरे; नीति–वचन एवं लोकसुभाषित
13	डिजिटल एवं सोशल मीडिया आधारित लोक–अभिव्यक्तियाँ	त्वरित राजनीतिक संप्रेषण, जनमत, डिजिटल सहभागिता, सामाजिक प्रतिक्रिया एवं लोकचेतना का प्रसार	सोशल मीडिया पर प्रसारित गढ़वाली लोकगीत; समसामयिक घटनाओं पर बनाए गए वीडियो गीत; डिजिटल जनगीत एवं आंदोलनकारी गीत; रील/वीडियो के माध्यम से प्रसारित लोक–अभिव्यक्तियाँ; इंटरनेट आधारित समकालीन लोकसाहित्य

उपरोक्त 13 श्रेणियों को राजनीतिक चेतना के व्यापक स्वरूप के आधार पर निम्न 6 प्रमुख आयामों में भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. **व्यापक राजनीतिक आयाम संबंधित लोकसाहित्यिक श्रेणियाँ–** राजसत्ता, शासन एवं नेतृत्व वीर गाथाएँ एवं पंवाड़े, लोककथाएँ, राजनीतिक व्यंग्य गीत; लोकोक्तियाँ एवं कहावतें।
2. **न्याय, अधिकार एवं सामाजिक चेतना–** जागर एवं देव–परंपरा, सामाजिक लोकगीत; लोककथाएँ; महिला लोक–अभिव्यक्तियाँ।
3. **जनसंघर्ष, प्रतिरोध एवं आंदोलन**–आंदोलनकारी लोकगीत, उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन के लोकगीत; पर्यावरण एवं संसाधन संबंधी गीत
4. **विकास, रोजगार एवं जनसमस्याएँ–** सामाजिक लोकगीत पलायन एवं बेरोजगारी के गीत, घटना–प्रधान एवं समसामयिक लोकगीत।
5. **क्षेत्रीय अस्मिता एवं सामुदायिक राजनीतिक चेतना–** वीरगाथाएँ, राज्य आंदोलन के लोकगीत, जागर आंदोलनकारी गीत; लोकनाट्य।
6. **समकालीन राजनीतिक संप्रेषण**– राजनीतिक व्यंग्य गीत घटना–प्रधान लोकगीत; डिजिटल एवं सोशल मीडिया आधारित लोक–अभिव्यक्तियाँ।

उक्त वर्गीकरण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि गढ़वाल मण्डल के लोकसाहित्य और राजनीतिक चेतना के मध्य एक गहरा एवं अटूट संबंध विद्यमान है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तावित शोध "लोकसाहित्य और लोकतांत्रिक राजनीति गढ़वाल मण्डल में लोकसाहित्य एवं राजनीतिक चेतना के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन" का मूल उद्देश्य गढ़वाल के लोकसाहित्य को केवल साहित्यिक अथवा सांस्कृतिक विरासत के रूप में देखने के बजाय उसके सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक आयामों को समझना है। गढ़वाल मण्डल की समृद्ध लोकपरंपरा में लोकगीत, लोकगाथा, जागर, लोककथा, लोकनाट्य, लोकोक्तियाँ, कहावतें तथा समकालीन डिजिटल लोक–अभिव्यक्तियाँ स्थानीय समाज के अनुभवों, सामूहिक स्मृतियों, संघर्षों, आकांक्षाओं और सामाजिक संबंधों को अभिव्यक्त करती हैं। इन लोक–अभिव्यक्तियों में सत्ता, शासन, न्याय–अन्याय, अधिकार, नेतृत्व, सामाजिक असमानता, सामुदायिक निर्णय, प्रतिरोध तथा जनसरोकारों से संबंधित अनेक तत्व दिखाई देते हैं।

अध्ययन से यह समझने का प्रयास किया गया कि राजनीतिक चेतना केवल चुनाव, राजनीतिक दल अथवा औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि अधिकार–बोध, सामाजिक न्याय, समानता, जनभागीदारी, स्थानीय स्वशासन, सामुदायिक निर्णय, शासन के प्रति उत्तरदायित्व और सार्वजनिक समस्याओं के प्रति जागरूकता जैसे व्यापक लोकतांत्रिक तत्वों में भी अभिव्यक्त होती है। इस दृष्टि से वीरगाथाओं और पंवाड़ों में सत्ता–संघर्ष एवं

सामुदायिक प्रतिरोध, जागर परंपरा में लोकन्याय एवं सामुदायिक स्मृति, सामाजिक लोकगीतों में जनसमस्याएँ, राजनीतिक व्यंग्य में शासन एवं नेतृत्व की लोक–दृष्टि तथा आंदोलनकारी गीतों में जनप्रतिरोध और अधिकार की चेतना का अध्ययन महत्वपूर्ण होगा। उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन, पर्यावरणीय आंदोलनों, पलायन, बेरोजगारी, विकास, स्थानीय संसाधनों, महिला सहभागिता तथा क्षेत्रीय अस्मिता से संबंधित लोक–अभिव्यक्तियाँ यह समझने का अवसर प्रदान करती हैं कि सामाजिक अनुभव किस प्रकार राजनीतिक प्रश्नों में परिवर्तित होते हैं। साथ ही डिजिटल माध्यमों ने लोकसाहित्य के निर्माण, संरक्षण, पुनर्प्रस्तुति और प्रसार को नया स्वरूप दिया है।

समग्रतः यह शोध गढ़वाल मण्डल के लोकसाहित्य में निहित राजनीतिक चेतना की निरंतरता, परिवर्तन और समकालीन पुनर्व्याख्या को समझने का प्रयास है। अध्ययन से यह स्पष्ट करने में सहायता मिलती है कि लोकसाहित्य किस प्रकार सामाजिक अनुभवों, राजनीतिक स्मृतियों, जनसरोकारों, प्रतिरोध, अधिकार–बोध और लोकतांत्रिक सहभागिता को अभिव्यक्त एवं संप्रेषित करता है। इस प्रकार लोकसाहित्य अध्ययन, राजनीति विज्ञान, लोकसंस्कृति, इतिहास, समाजशास्त्र तथा मीडिया अध्ययन के बीच एक अंतर्विषयक सेतु स्थापित करते हुए गढ़वाल की लोकतांत्रिक राजनीतिक चेतना को समझने में महत्त्वपूर्ण अकादमिक योगदान प्रदान कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. बाबुलकर, मोहनलाल – गढ़वाली लोक–साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग 1964।
2. चातक, गोविन्द – गढ़वाली लोकगीत, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली 2000।
3. चातक, गोविन्द – गढ़वाली लोकगीत विविधा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली 2001।
4. नौटियाल, शिवानन्द – गढ़वाली लोकमानस – अमित प्रकाशन, गाजियाबाद 1975।
5. काल, जनार्दन प्रसाद – गढ़वाली भाषा और उसका लोक साहित्य कृ समय साक्ष्य, देहरादून 2012।
6. चंदोला, सरला – उत्तराखण्ड का लोक साहित्य और जनजीवन कृ तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली 1999।
7. भट्ट, दिवा – उत्तराखण्ड की लोक साहित्य परम्परा श्री अल्मोड़ा बुक डिपो 1998।
8. नेगी, संजीव सिंह '– लोक साहित्य के सिद्धांत और गढ़वाली लोक साहित्य का संदर्भ नवराज प्रकाशन 2006।
9. उनियाल, राजेश्वर – उत्तरांचली लोक–साहित्य किताबघर, नई दिल्ली 2009।
10. जोशी, प्रयाग – उत्तराखण्ड की लोकगाथाएँ एक विवेचन समय साक्ष्य, देहरादून 2021।
11. नेगी, महिपाल सिंह (सम्पा.) घसियारियों के गीत बाजूबंद समय साक्ष्य, देहरादून 2017।